क्या केहना (ज़रूरी था 2) Kya Kehna Zaroori Tha 2 Lyrics in Hindi Rahat Fateh Ali Khan

किसी की बस जरा सी बेवफाई मार देती है
मोहब्बत में ना सोचा था जुदाई मार देती है

क्या कहना सब मुनासिब था समझ लेते ना आखों से
क्या कहना सब मुनासिब था समझ लेते ना आखों से

के दस्तक दे रहे आसूं तेरे दिल के दरीचों से
के खुशफ़हमी ना जाने क्यों मेरा सब कुछ तुम्ही से है

पलट कर तुम ही ना देखो यकीनन फिर कमी सी है
उलझ कर भी मिला कुछ ना मुझे अपने नसीबों से
जो तुम ही ना हुए अपने क्या लेना फिर रकीबों से

है रोना उम्र भर मैंने जुदा हस के किया तूने
वफ़ा की बात करते थे दिया कैसा दगा तूने

हुए आदि तुम्हारे जो मोहब्बत छोड़ दी तूने
मगर ये ऐद करते हैं जुदाई हम निभाएंगे

किसी पे मरके भी जीते हैं कैसे ये दिखाएंगे
दिए भी तो दिए कैसे ये तुमने जख्म काटों से

फ़क़त तुझको ही दिखने है हुआ कुछ ना तबीबों से

किया था इस्तिखारा तो तेरी उल्फत को देखा था
मैं सीधा इश्क़ पे पोहंचा मोहब्बत को ना देखा था

कनारे पर लगा कर क्यों कनारे हम से कर बैठे
तकाजे तेरी चाहत के अधूरे थे तो कह देते

यूँ जाना छोड़ कर तेरा युहीं चुपचाप सह लेते

ना होते दरबदर तुझमे ना होते हम मसीरों से

लिखा था साथ बस इतना समझ लेते लकीरों से
क्या कहना सब मुनासिब था समझ लेते ना आखों से